जनवाचन आंदोलन

बाल पुस्तकमाला

‘‘ किताबों में चिड़ियाँ चहचहाती हैं
किताबों में खेतियाँ लहलहाती हैं
किताबों में झरने गुनगुनाते हैं
परियों के किस्से सुनाते हैं
किताबों में रॉकेट का राज है
किताबों में साइंस की आवाज है
किताबों का कितना बड़ा संसार है
किताबों में ज्ञान की भरमार है
क्या तुम इस संसार में नहीं जाना चाहोगे?
किताबें कुछ कहना चाहती हैं
तुम्हारे पास रहना चाहती हैं ’’

–सफ़दर हाश्मी

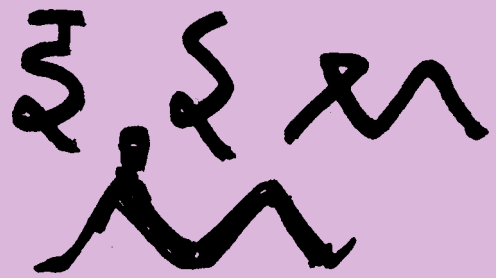

**हर पत्ती, टहनी, तिनके में विलक्षण नमूने छिपे हैं।
हमारे आसपास कला का अथाह समुद्र बिखरा पड़ा है।
हम देखने के बाद भी उसे नहीं देखते हैं।
किताब में कला को देखने का एक नज़रिया बताया गया
है।हरेक तुच्छ वस्तु में भी कोई न कोई कला छिपी होती है।
बस सच्ची आंखों से देखने की ज़रूरत है।**

भारत ज्ञान विज्ञान समिति

मूल्य: 10 रुपये B - 18 Price: 10 Rupees

खेल खेल में शिक्षा

विष्णु चिंचालकर

इस किताब का प्रकाशन भारत ज्ञान विज्ञान समिति ने देश भर में चल रहे साक्षरता अभियानों में उपयोग के लिए किया गया है। जनवाचन आंदोलन के तहत प्रकाशित इन किताबों का उद्देश्य गाँव के लोगों और बच्चों में पढ़ने-लिखने की रुचि पैदा करना है।

खेल खेल में शिक्षा : विष्णु चिंचालकर
Khel Khel Mein Shiksha : Vishnu Chinchalkar

जनवाचन बाल पुस्तकमाला के तहत भारत ज्ञान विज्ञान समिति द्वारा प्रकाशित

© सर्वाधिकार सुरक्षित,
भारत ज्ञान विज्ञान समिति

रेखांकन : विष्णु चिंचालकर
लेजर ग्राफिक्स : अभय कुमार झा

सातवां संस्करण : वर्ष 2007

मूल्य : 10 रुपये
Price : 10 Rupees

Published by Bharat Gyan Vigyan Samiti
Basement of Y.W.A. Hostel No. II, G-Block
Saket , New Delhi - 110017
Phone : 011 - 26569943, Fax : 91 - 011 - 26569773
email: bgvs_delhi@yahoo.co.in, bgvsdelhi@gmail.com
Printed at Sun Shine Offset , New Delhi - 110018

खेल खेल में शिक्षा

विष्णु चिंचालकर

खेल खेल में शिक्षा

छोटे बालक की स्वाभाविक प्रवृति खेलने की होती है; इस बात को ध्यान में रखना ज़रूरी है। यदि खेल खेल में बच्चे को कोई बात समझाई जाए तो वह उसे आसानी से समझता है। इसीलिए बालक की शिक्षा में ऐसे साधन महत्वपूर्ण होते हैं जिनके साथ खेला जाए।

चित्रकारी भी शिक्षा का एक महत्वपूर्ण माध्यम और साधन है। इसमें रेखा, रंग और आकारों का खेल बहुत ही रोचक है। खेल–खेल में आड़ी–तिरछी, टेढ़ी–मेढ़ी, सरल तथा घुमावदार रेखाओं से कई प्रकार के आकार बन जाते हैं। कई बार रंगों के छींटे और धब्बे भी अजीबोग़रीब आकार बना लेते हैं। आसमान में बादलों के जमाव या बिखराव में ऐसे ही आकार दिखाई देते हैं।

शुरू में ये आकार बेमतलब से लगते हैं, परंतु ग़ौर से देखने पर उनमें धीरे–धीरे परिचित शक्लें उभरने लगती हैं; जबकि वास्तव में वहां होते हैं केवल धब्बे और बादलों के टुकड़े। शक्लें होती हैं देखने वालों के मस्तिष्क में। दरअसल हर देखने वाले व्यक्ति के अंदर मौजूद सुप्त चित्रकार उन्हें देखकर अपनी कल्पना से शक्लें या चित्र बनाता है।

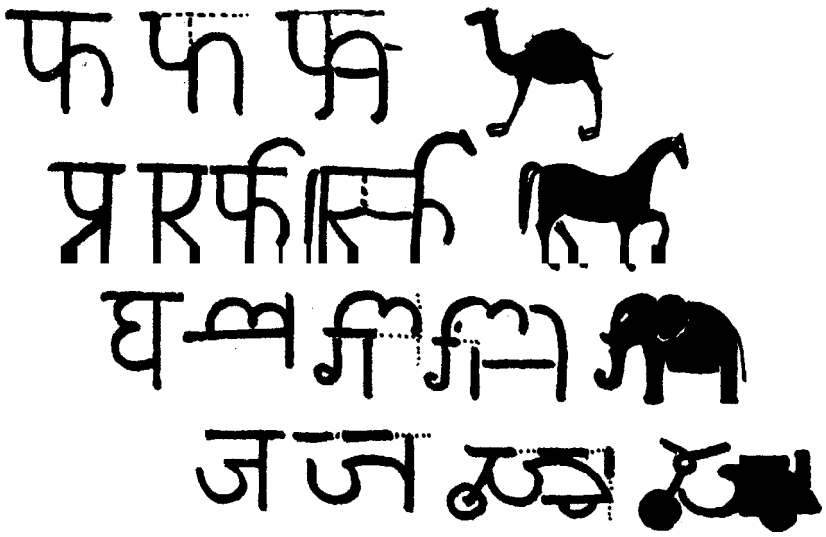

प्रकृति ने खूब सारी बातें, प्रवृत्तियां हमारे मस्तिष्क में दे रखी हैं। वे सारी सुप्तावस्था में होती हैं। हमारा बाहरी वातावरण, उसमें होने वाली प्रत्येक छोटी–बड़ी चीज़ उस प्रवृत्ति को जगाने, उकसाने का काम करती है। उसके उकसावे में हम किस तरह आते हैं, किस प्रकार प्रतिक्रिया करते हैं, यह हमारी संवेदनशीलता पर निर्भर करता है।

वातावरण में पाई जाने वाली चीज़ों को देखकर, सुनकर, स्पर्श कर हमारे अंदर का सुप्त चित्रकार, गायक, नर्तक, कवि तथा वैज्ञानिक जाग उठता है और उनसे अपनी प्रवृत्ति के अनुरूप प्रेरणा ग्रहण करता है।

सही मायने में हमारा वातावरण तथा उसकी हर चीज़ हमारी शिक्षक होती है। वह अपने कार्यकलापों से हमारी जिज्ञासा जगाती है। हमारे चिंतन तथा कल्पना को अंजाम

देती है। हम अपनी संवेदन क्षमता के अनुरूप जो अनुभव ग्रहण करते हैं, जो निष्कर्ष निकालते हैं, वही हमारी सही शिक्षा है।

बालक केवल मिट्टी का लोंदा नहीं है जिस पर हम अपनी इच्छा के अनुरूप कोई आकार थोपें। उसके अंदर विद्यमान प्रवृत्ति का, उसके कार्यकलापों का सूक्ष्म निरीक्षण करना जरूरी है। उसकी संवेदनशीलता को पहचानना ज़रूरी है, ताकि उसके सही विकास में हम अपना रचनात्मक योगदान दे सकें। हमारी अनावश्यक दखलंदाज़ी से उसके विकास में अवरोध पैदा होता है। अतः हमारी (पालकों तथा शिक्षकों की) भूमिका अवरोध निर्माण की नहीं होनी चाहिए।

बालक के लिए तो सारा वातावरण एकदम नया होता है। हर चीज़ उसे अनूठी लगती है और स्वाभाविक संवेदनशील प्रवृत्ति के कारण वह उसके प्रति आकर्षित होता है। बरसों से किसी वस्तु को देखते रहने के कारण उसके प्रति हमारी संवेदना शिथिल हो जाती है। इसलिए बालक की जिज्ञासा और हरकत हमें निरर्थक जान पड़ती है, और हम उसे सहयोग देने की बजाय उसे दबाने का प्रयास करते हैं।

खेल की अपनी एक स्वाभाविक प्रवृत्ति होती है। खेल के दौरान ही बालकों को कई प्रकार के अनुभव प्राप्त होते हैं। उनमें से सुखद अनुभवों को वह दोहराता है। कई बार

वह अपनी बात को नाचते हुए कहता है। किसी वस्तु को उछालना–फेंकना, उससे दीवार पर कुरेदना, आड़ी–तिरछी कुरेदी हुई रेखाओं से बने निशानों को देखकर खुश होना, उसकी स्वाभाविक प्रवृत्ति का हिस्सा है। इन हरकतों से वह किस प्रकार का अनुभव पा रहा है, किस भावना को व्यक्त कर रहा है, इसकी हम ठीक–ठीक कल्पना नहीं कर पाते। हमें दिखाई देती है केवल बिगड़ी हुई ज़मीन और दीवारें। हमें नज़र आती हैं उसकी बेमतलब की उछलकूद और बेहूदगी। ऐसी स्थिति में हमें झल्लाने और नाराज़ होने की बजाय उसका सहयोग करना चाहिए। उसके लिए उचित सामग्री जुटाकर इन हरकतों को सही दिशा में मोड़ा जा सकता है।

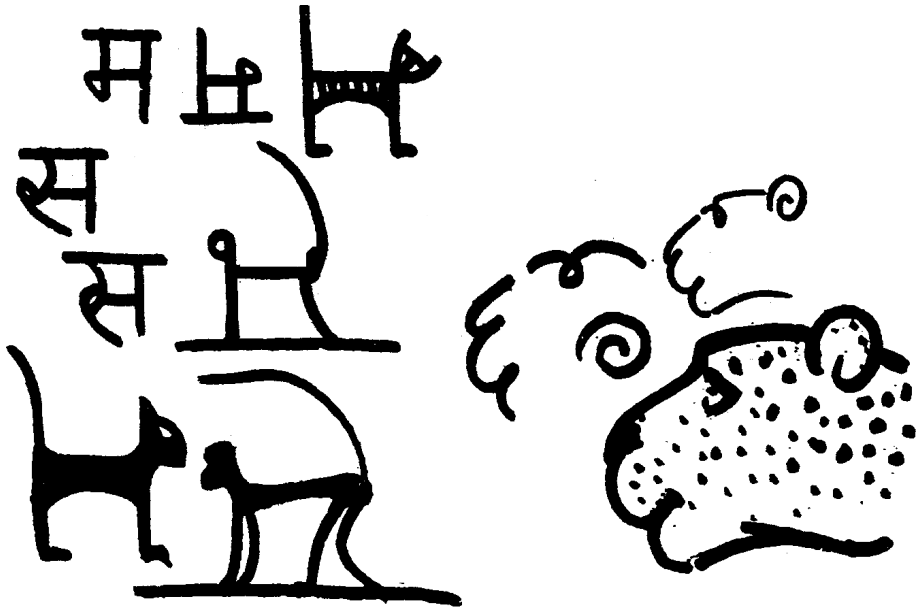

बच्चा चाहे आंगन में रेत बिछाकर खेल रहा हो या किसी टहनी से लकीरें बना-बिगाड़ रहा हो या फिर फर्श पर कच्ची मिट्टी के रंगों से खेल रहा हो—इन खेलों में उसका परिचय विभिन्न आकारों से हो जाता है। भले ही वह हमें दिखाई न दे, परंतु उसके मस्तिष्क में यह बात अंकित हो जाती है। ऐसे समय में यदि हम उससे अपनी समझ के मुताबिक कोई खास आकृति बनाने का आग्रह करें, तो उसके काम में दखलंदाज़ी होगी। इससे वह अपनी मौलिकता खो देगा और उसमें नकल की प्रवृत्ति शुरू होने की संभावना रहेगी। यह प्रवृत्ति उसके सही विकास में बाधक बन सकती है।

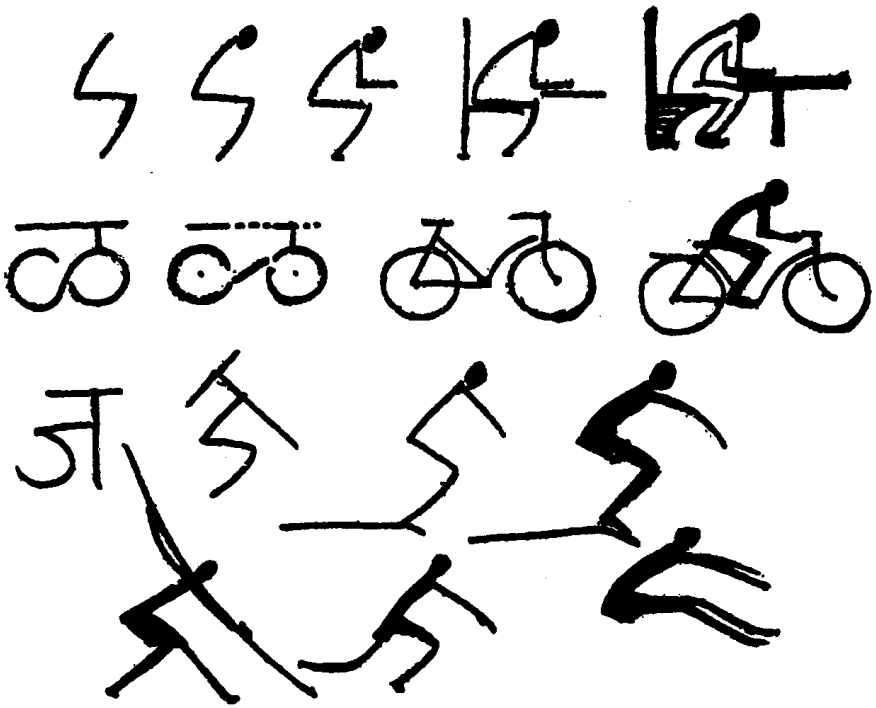

अक्षर ज्ञान

हम बोलते हैं तो ध्वनि होती है, जो सुनाई तो देती है परंतु दिखाई नहीं देती। ध्वनि के सुनाई पड़ने की एक सीमा है। उस सीमा तक ही उसे सुना जा सकता है और वह भी कुछ क्षण के लिए ही। विज्ञान ने आज इस ध्वनि को टेप में बांध दिया है, जिसे बार-बार सुना जा सकता है और स्थाई रूप दिया जा सकता है।

परंतु हज़ारों वर्ष पूर्व ध्वनि को संकेत के रूप में दृश्य आकारों में बांधा गया था, जिसे आज हम लिपि कहते हैं। उच्चारण किए हुए का दृश्य-रूप, आकार ही अक्षर है। लिपि के कारण हमारे सम्प्रेषण का माध्यम व्यापक हो गया है। इस सम्प्रेषण के लिए हर एक को साक्षर बनना आवश्यक है।

आमतौर पर बालकों की शिक्षा अक्षर ज्ञान से शुरू होती है। वैसे अक्षर ज्ञान कराने के विभिन्न तरीके अपनाए जा सकते हैं। एक तरीका परम्परा से चला आ रहा है जो अक्षरों को चित्र के साथ जोड़ता है—जैसे, अ अमरूद या अनार का, ख खरगोश का, क्ष क्षत्रिय का, ठ ठठेरे का आदि-आदि। वर्षों से हम इसी तरीके से साक्षर बने हैं। अ अमरूद का, ठ ठठेरे का ही क्यों? यह प्रश्न न तो पढ़ाने वाले के और न ही पढ़ने वाले के मन में कभी आया है। हां, यह तरीका अक्षर को मुखाग्र करने में आसान रहा है।

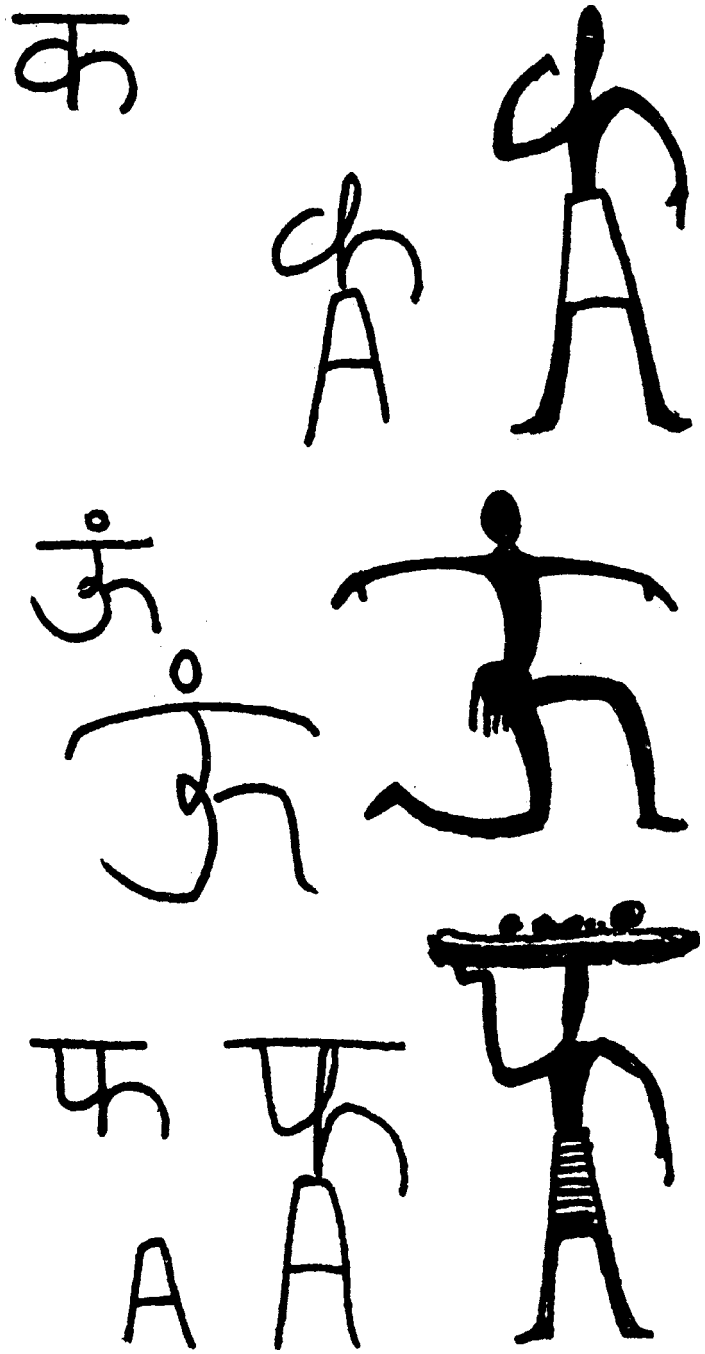

परंतु इसी कारण से हमें रटने की आदत पड़ गई है और वह इस कदर हम लोगों से चिपक गई है कि बालक को कौन कहे, उसका शिक्षक भी इसे छोड़ नहीं पाता। जब कभी मैं बोर्ड पर कोई अक्षर लिखकर सवाल करता हूं तो बच्चे और शिक्षक दोनों ही, चित्र के साथ उस अक्षर का उच्चारण करते हैं; मानो उस चित्र ने उस अक्षर का ठेका ले रखा हो। फिर मैं अनार और ठठेरे का चित्र बनाकर उनमें अ और ठ ढूंढने को कहता हूं, तो अक्षरों का पता ही नहीं चलता। सारे के सारे अक्षर ऐसे हैं जिनका अक्षरों के साथ जुड़े चित्र के रूप के साथ कोई मेल नहीं जमता। तब फिर ऐसे चित्रों के साथ चिपकने से क्या मतलब? चित्र ऐसे हों जिनमें उन अक्षरों का रूप दिखाई दे। परंतु ऐसे चित्र खोज पाने के लिए आवश्यकता है निरीक्षण और कल्पनाशीलता की। अच्छे शिक्षक के लिए यह एक चुनौती ही है। अब एक प्रश्न मन में उठता है कि हम साक्षर तो कहलाते हैं, परंतु क्या पूर्ण रूप से हम अक्षरों से परिचित हैं?

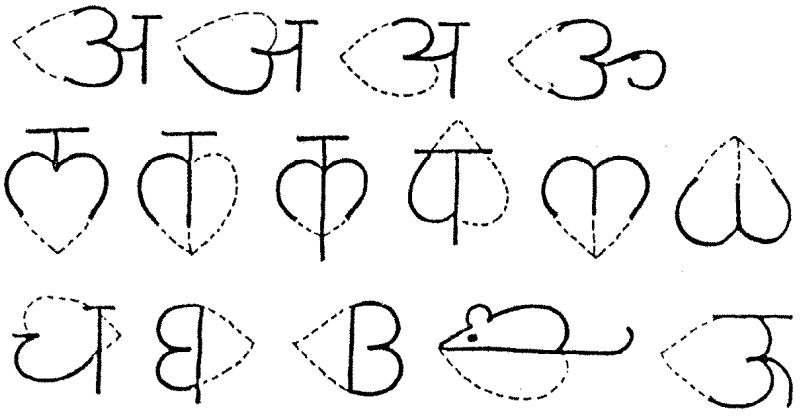

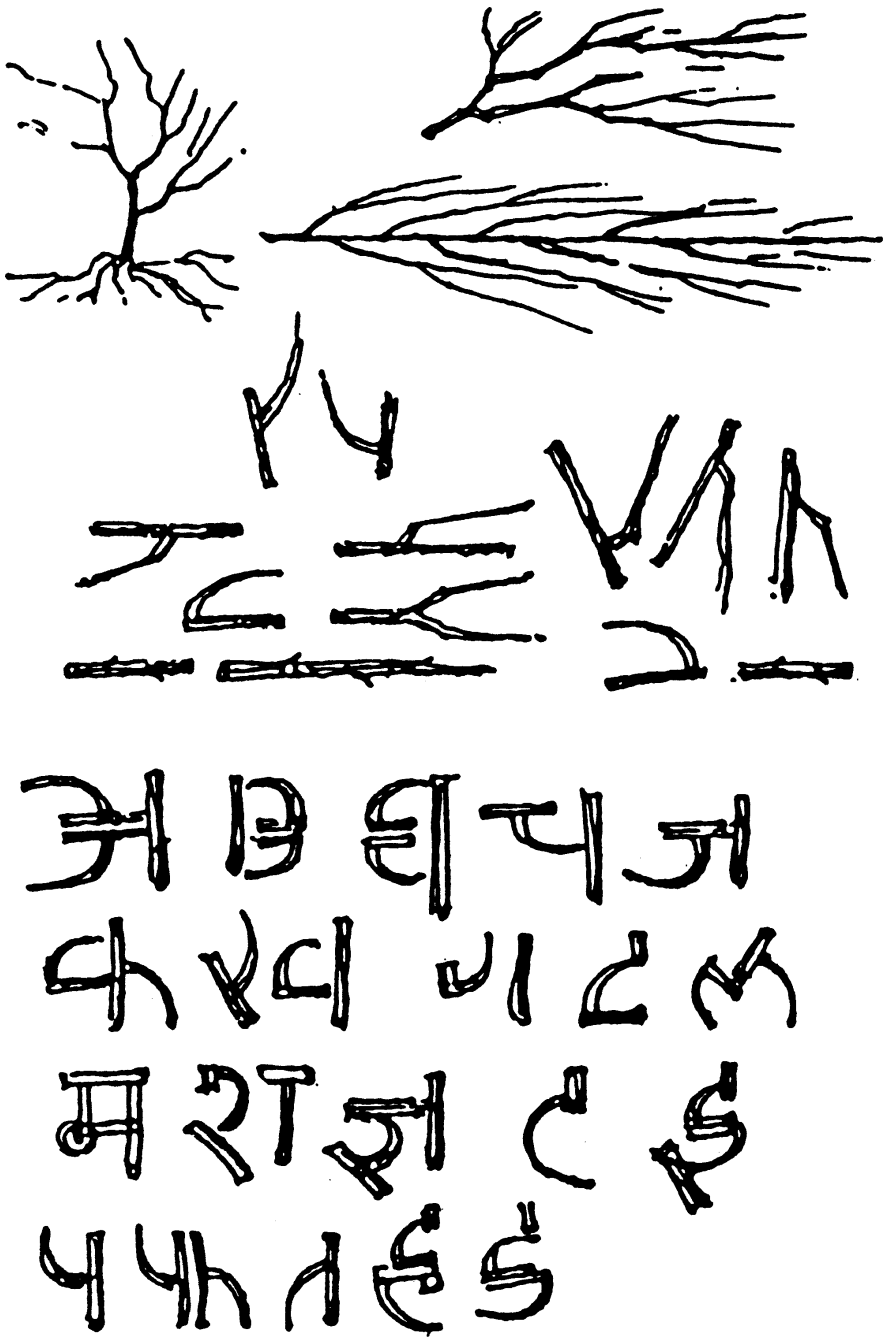

छपे हुए या लिखे हुए अक्षरों के अलावा क्या हम अपने इर्द-गिर्द बिखरे हुए अप्रत्यक्ष रूप से फैले हुए अक्षरों को पहचान पाते हैं? वास्तव में हम उन्हें पहचानने की आवश्यकता ही महसूस नहीं करते। उनके बिना भी हमारा सारा काम चल जाता है। फिर लीक से हटकर व्यर्थ का प्रयास क्यों करें!

यदि हम अपने आंगन की वस्तुओं की ओर ज़रा ध्यान दें, जैसे—पत्तियां, फल, फूल, सूखी टहनियां आदि का निरीक्षण करें, तो उनसे हमें बहुत सी जानकारी मिल सकती है। उदाहरण के लिए, पीपल का एक पत्ता लीजिए। डंठल टहनी से जुड़ा हुआ पत्ता हमारे सामने प्रत्यक्ष 'अ' है। चित्र के साथ अक्षर के दृश्य रूप का मेल जम गया और अक्षर के साथ चित्र बनाना भी आसान हो गया।

इसी प्रकार कुछ अलग-अलग प्रकार की पत्तियां और कुछ टहनियां एकत्र कीजिए। उनकी शक्ल-सूरत उनकी विशेषताओं को समझने का प्रयास कीजिए। फिर बच्चों के साथ अलग-अलग तरीके से उन जानकारियों के बारे में बातचीत कीजिए। आप पाएंगे कि आपसे प्रोत्साहन पाकर बच्चे इनमें रुचि लेंगे और उन्हें खेल-खेल में ही अध्ययन की ढेर सारी सामग्री मिल जाएगी।

ये हुए पीपल या उसकी जैसी पत्तियों से मिलने वाले आकार और उनके द्वारा बने हुए कुछ अक्षरों के नमूने। इसी प्रकार अक्षरों में पाए जाने वाले मुख्य आकार तथा

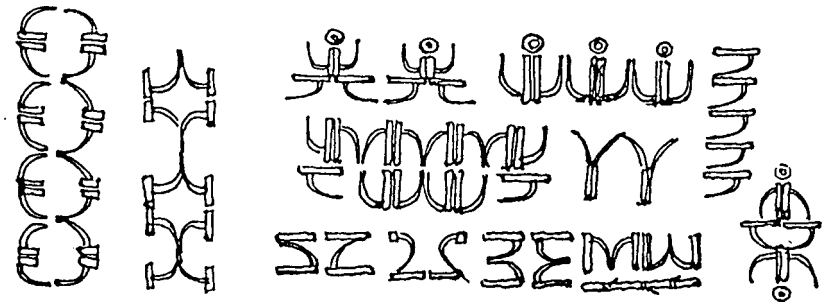

उनकी विशेषताओं को समझकर अन्य पत्तियों में भी उन्हें खोजने का खेल हो सकता है।

अब हम टहनियों के बारे में देखेंगे। अपने आंगन के ही सूखे हुए पौधों को उखाड़ कर, उनकी कटाई-छंटाई कर हम काफी सारी टहनियां जुटा सकते हैं। इनमें अरहर की डंडियां तथा बबूल की टहनियां अच्छी तरह से काम आ सकती हैं। इस प्रकार टहनियों से समान आकार के टुकड़े काट लीजिए।

इस प्रकार विभिन्न आकार के कई टुकड़े बना लीजिए, ताकि खेलने में सुविधा हो। इनकी जमावट से तरह तरह के डिज़ाइन, चित्र तथा अक्षर बनाए जा सकते हैं। केवल इन्हीं आकारों से सारे अक्षर बन सकते हैं। यहां कुछ नमूने प्रस्तुत किए गए हैं।

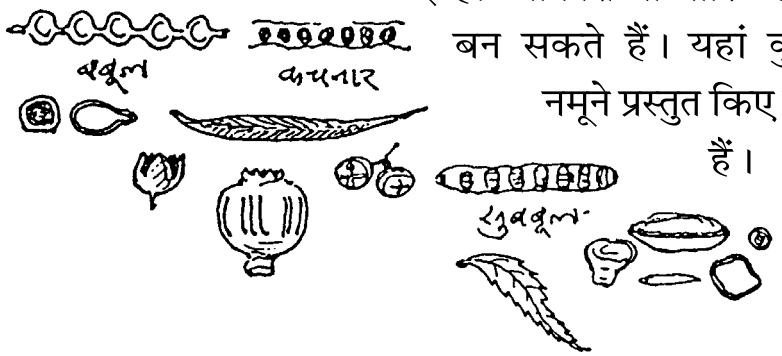

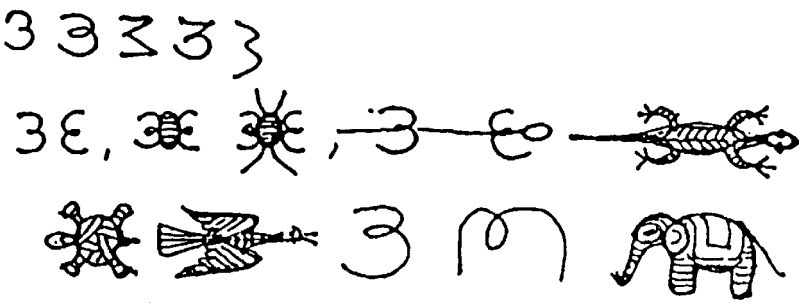

इस प्रकार अलग-अलग आकार के टुकड़ों की जमावट के खेल के साथ-साथ अक्षर ज्ञान का काम भी आसानी से हो सकता है। इस खेल से बालकों को अक्षरों की सही पहचान हो जाती है तथा वे विशिष्ट आकारों का चयन कर उनसे शब्द बनाने का अभ्यास कर सकते हैं।

अक्षरों के अलावा जमावट से भिन्न-भिन्न डिज़ाइनों की रचना भी खेल खेल में हो सकती है। जमावट के द्वारा कई प्रकार के डिज़ाइन अपनी कल्पना शक्ति के द्वारा बनाए जा सकते हैं। डिज़ाइन बनाते-बनाते कभी अक्षर (हिंदी और अंग्रेज़ी के भी) बन जाते हैं तो कभी अक्षरों की जमावट में डिज़ाइन। टहनियों के साथ बीज, फलियों का प्रयोग और भी रोचक हो सकता है। इस बहाने अलग-अलग आकारों के बीज तथा फलियां खोजने की प्रवृत्ति का विकास भी होता है।

वास्तव में इस प्रकार की चीज़ों को खोजने और संग्रहित करने की स्वाभाविक प्रवृत्ति बालकों में होती है। उन्हें प्रोत्साहित करने में सहयोग आवश्यक है।

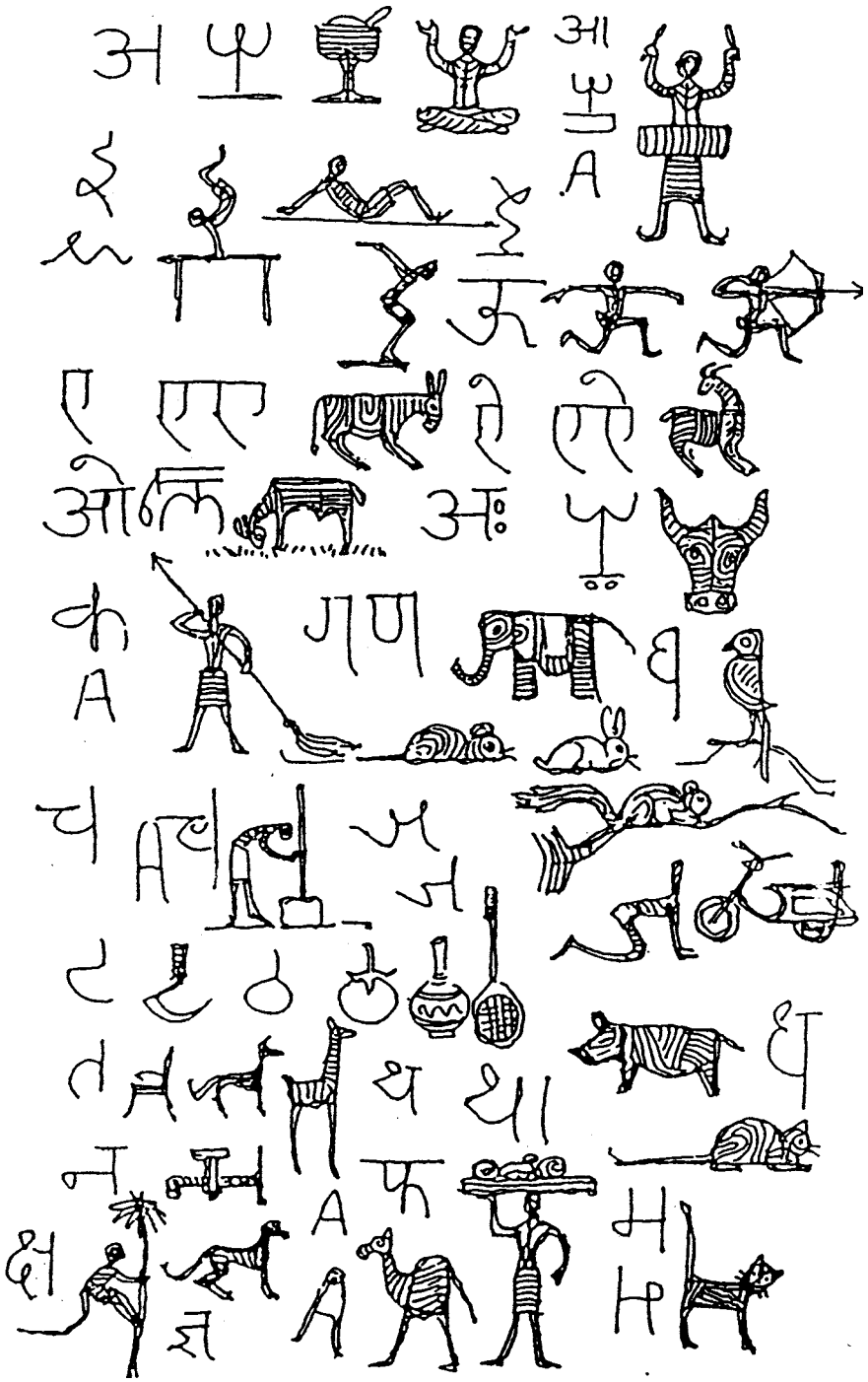

अक्षरों में चित्र

हम किसी सुनसान जगह या जंगल से गुज़रते हैं और हमें कहीं कोई कंकाल नज़र आ जाता है, तो वह कंकाल किस पशु–पक्षी या जीव का हो सकता है, इसकी हम कल्पना कर सकते हैं। केवल एक ढांचे से पूर्ण रूप की हमें कल्पना हो जाती है।

अब केवल रेखाओं से बना हुआ अक्षर भी तो लगभग एक कंकाल की ही तरह होता है। क्या उसे देखकर हमने कभी किसी प्राणी या वस्तु की कल्पना की है? जिस प्रकार पत्तियों में हमने अक्षरों को देखा उसी प्रकार अगर अक्षरों के साथ खेला जाए, मतलब उन्हें चारों ओर घुमाकर, उलट–पुलट कर निहारा जाए तो उनमें छुपे हुए चित्रों को हम पहचान सकते हैं। बालकों के लिए यह भी एक मनोरंजक खेल हो सकता है।

अक्षर ज्ञान की शुरुआत होती है स्वरों से। यानी ऊं से शुरू करके अ, आ, इ, ई से अः तक। इन्हें गौर से देखिए तो पता चलेगा कि 'उ' आकार प्रमुख है। अब इसी आकार के साथ खेला जाए। इसकी लिखावट भिन्न–भिन्न प्रकार की होते हुए भी उनका स्वभाव वही बना रहता है।

अक्षरों में किस प्रकार चित्र दिखाई देते हैं इसके कुछ नमूने आपने देखे। परंतु ये इतने तक ही सीमित नहीं हैं।

आप अपनी कल्पना से इनसे हटकर और भी अलग-अलग चित्र बनाने का प्रयास करें। केवल इस बात का ध्यान रहे कि चित्र और अक्षर में सामंजस्य बना रहे। प्रत्येक अक्षर एक स्वतंत्र चित्र है। खोजने पर इनमें अपार संभावनाएं दिखाई देंगी।

अक्षरों के अनुरूप ही अपने आंगन में और भी ऐसी वस्तुएं हैं जिन्हें हम बेकार समझकर फेंक देते हैं—जैसे नारियल की नट्टी, आम की गुठली, मकई का भुट्टा, सिंगाड़े का छिलका वगैरह। इनसे मज़ेदार खिलौने बन सकते हैं। इनके कुछ नमूने आप देख सकते हैं।

❐❐❐